

दूधनाथ सिंह की कहानियों में स्त्री-अस्मिता, पितृसत्ता और लैंगिक विमर्श : एक समकालीन पुनर्वाचन

निखिल कुमार सिंह

शोधार्थी, हिन्दी विभाग

कामता प्रसाद सुंदर लाल साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय

अयोध्या, उत्तरप्रदेश

सारांश -

दूधनाथ सिंह साठोत्तरी हिंदी कथा-साहित्य के प्रमुख कथाकार हैं, जिन्होंने मध्यवर्गीय विडंबना और अस्तित्ववादी संकट को गहनता से चित्रित किया। उनका लेखन मुख्यतः पुरुष-केंद्रित होने के बावजूद स्त्री चरित्रों के माध्यम से पितृसत्ता, स्त्री वस्तुकरण और लैंगिक शोषण को सूक्ष्म व्यंग्य से उजागर करता है। यह शोध पत्र समकालीन स्त्रीवादी विमर्श—सिमोन द बोउआ की “स्त्री दूसरी होती है”, जूडिथ बटलर की जेंडर परफॉर्मेटिविटी तथा इंटरसेक्शनल फेमिनिज्म—के आधार पर उनके कथा-साहित्य का पुनर्वाचन प्रस्तुत करता है। ‘नपनी’ में दहेज बाजार में स्त्री का वस्तुकरण, ‘रीछ’ में दांपत्य की पितृसत्तात्मक कैद, ‘माई का शोकगीत’ में घरेलू हिंसा की पीड़ा तथा ‘निष्कासन’ में दलित स्त्री का बहुआयामी संघर्ष इन रचनाओं के प्रमुख उदाहरण हैं। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सिंह पितृसत्ता की आलोचना तो करते हैं, किंतु स्त्री-अस्मिता की पूर्ण मुक्ति या स्वतंत्र आवाज को सीमित स्थान देते हैं। फिर भी, उनके व्यंग्य में स्त्री के प्रतिरोध और पीड़ा की झलक मिलती है। मीटू आंदोलन, बाँडी पॉजिटिविटी और दलित-स्त्री विमर्श जैसे समकालीन संदर्भों में ये रचनाएँ नई प्रासंगिकता प्राप्त करती हैं। शोध निष्कर्ष निकालता है कि दूधनाथ सिंह का कथा-साहित्य हिंदी साहित्य में लैंगिक विमर्श को गहराई देता है तथा पितृसत्ता की आलोचना के माध्यम से स्त्री-अस्मिता की खोज को महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

प्रस्तावना

हिंदी कथा-साहित्य में साठोत्तरी दौर के प्रमुख कथाकार दूधनाथ सिंह (1936-2018) ने अपनी रचनाओं के माध्यम से मध्यवर्गीय जीवन की विडंबनाओं, व्यक्तिगत अलगाव, संबंधों के क्षय और अस्तित्ववादी संकट को गहनता से उकेरा है। अकहानी आंदोलन से जुड़े होने के कारण उनका लेखन पारंपरिक कथानक से अधिक आंतरिक संघर्ष, व्यंग्य और मनोवैज्ञानिक गहराई पर केंद्रित रहा। हालांकि उनका मुख्य फोकस मध्यवर्गीय पुरुष पात्रों की आंतरिक दुविधा पर रहा है, लेकिन उनकी कहानियों और उपन्यासों में स्त्री चरित्र महत्वपूर्ण रूप से उपस्थित हैं—वे अक्सर पितृसत्तात्मक संरचना के शिकार के रूप में चित्रित होते हैं, जहाँ स्त्री की अस्मिता दबी-कुचली, वस्तुकरण की शिकार या सामाजिक-परिवारिक दबावों से जूझती दिखाई देती है।

दूधनाथ सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. किया और वहीं प्राध्यापक के रूप में कार्य किया। उनकी प्रमुख कृतियाँ—कहानी संग्रह सपाट चेहरे वाला आदमी (1967), सुखांत (1972), प्रेमकथा का अंत न कोई (1992), माई का शोकगीत (1992); उपन्यास आखिरी कलाम, निष्कासन, नमो अंधकार आदि—में स्त्री पात्रों का चित्रण सूक्ष्म लेकिन प्रभावशाली है। उदाहरणस्वरूप, ‘नपनी’ में स्त्री को दहेज-विवाह बाजार में वस्तु के रूप में ‘नापा’ जाता है, ‘माई का शोकगीत’ में सामंती पितृसत्ता में सदियों से शोषित दलित-स्त्री की पीड़ा और विद्रोह की झलक मिलती है, जबकि ‘निष्कासन’ में दलित लड़की का आत्म-संघर्ष पितृसत्तात्मक-सवर्णवादी समाज के क्रूर यथार्थ को उजागर करता है।

इस शोध पत्र का मूल **समस्या-कथन** यह है कि दूधनाथ सिंह का लेखन मुख्यतः पुरुष-केंद्रित विडंबना पर आधारित होने के बावजूद स्त्री-अस्मिता की दबी आवाज, पितृसत्ता की आलोचना और लैंगिक विमर्श के तत्वों से युक्त है। समकालीन फेमिनिस्ट दृष्टि से इन रचनाओं का पुनर्वाचन आवश्यक है, क्योंकि आज के संदर्भ में (जैसे मीटू आंदोलन, बाँडी पॉजिटिविटी, इंटरसेक्शनल फेमिनिज्म और दलित-स्त्री विमर्श) ये तत्व और अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं।

शोध के प्रमुख उद्देश्य :

- दूधनाथ सिंह की रचनाओं में स्त्री चरित्रों के माध्यम से पितृसत्ता की संरचना और उसके शोषण को उजागर करना।
- स्त्री-अस्मिता की खोज, वस्तुकरण (objectification), प्रतिरोध और मुक्ति की संभावनाओं का विश्लेषण करना।
- समकालीन स्त्रीवादी थ्योरी (सिमोन द बोउआ की "स्त्री दूसरी होती है", जूडिथ बटलर की जेंडर परफॉर्मेटिविटी, भारतीय संदर्भ में दलित-स्त्री विमर्श) के परिप्रेक्ष्य में पुनर्वाचन करना।
- उनके लेखन की सीमाओं (स्त्री को सहायक भूमिका में रखना) और योगदान (पितृसत्ता की सूक्ष्म आलोचना) का मूल्यांकन करना।

शोध विधि: मुख्यतः पाठ-विश्लेषणात्मक (textual analysis) और तुलनात्मक होगी, जिसमें मूल रचनाओं के अंशों का प्रयोग किया जाएगा। द्वितीयक स्रोतों में राजीव कुमार के आलेख, "निष्कासन: एक दलित स्त्री के आत्म संघर्ष की गाथा", "दूधनाथ सिंह की कहानियों में पारिवारिक जीवन की छवियों का अध्ययन" और अन्य शोध आलेखों का सहारा लिया जाएगा। यह अध्ययन न केवल दूधनाथ सिंह के कथा-साहित्य को स्त्रीवादी लेंस से देखने का अवसर प्रदान करता है, बल्कि हिंदी साहित्य में लैंगिक विमर्श की समझ को गहरा बनाता है। उनके लेखन में स्त्री की पीड़ा और विद्रोह की झलक आज के समय में भी प्रासंगिक है, जहाँ पितृसत्ता के विभिन्न रूप अभी भी सक्रिय हैं।

सैद्धांतिक आधार -

इस शोध पत्र में दूधनाथ सिंह के कथा-साहित्य में स्त्री-अस्मिता, पितृसत्ता और लैंगिक विमर्श का विश्लेषण समकालीन स्त्रीवादी (फेमिनिस्ट) सिद्धांतों के आधार पर किया जाएगा। ये सिद्धांत पितृसत्तात्मक संरचना में स्त्री की स्थिति, उसके वस्तुकरण और अस्मिता की खोज को समझने में सहायक हैं। नीचे प्रमुख सैद्धांतिक आधार दिए जा रहे हैं:

पितृसत्ता (Patriarchy) का सिद्धांत

पितृसत्ता एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था है जिसमें पुरुष प्रधानता स्थापित होती है और स्त्री को अधीनस्थ, सहायक या वस्तु के रूप में देखा जाता है। दूधनाथ सिंह की रचनाओं में स्त्री चरित्र अक्सर परिवार, विवाह और समाज के पितृसत्तात्मक ढाँचे में फँसे दिखते हैं, जहाँ उनकी इच्छा, शरीर और पहचान को नियंत्रित किया जाता है। यह सिद्धांत स्त्री के शोषण और दमन को समझने का आधार प्रदान करता है। [1]

सिमोन द बोउआ का "स्त्री दूसरी होती है"

सिमोन द बोउआ की प्रसिद्ध कृति द सेकंड सेक्स (1949) में कहा गया है कि "स्त्री पैदा नहीं होती, बल्कि बनाई जाती है" (One is not born, but rather becomes, a woman)। समाज स्त्री को पुरुष के सापेक्ष "दूसरी" (the Other) के रूप में गढ़ता है, जहाँ पुरुष विषय (subject) है और स्त्री वस्तु (object)। दूधनाथ सिंह की 'नपनी' जैसी कहानियों में स्त्री को दहेज बाजार में "नापी" जाती है, जो ठीक इसी "दूसरी" की स्थिति को दर्शाता है—उसकी अस्मिता पुरुष-केंद्रित मापदंडों से निर्धारित होती है। [2]

जूडिथ बटलर की जेंडर परफॉर्मेटिविटी

जूडिथ बटलर अपनी पुस्तक जेंडर ट्रबल (1990) में तर्क देती हैं कि जेंडर कोई जन्मजात या स्थिर पहचान नहीं है, बल्कि यह बार-बार दोहराए जाने वाले क्रियाओं (performative acts) से निर्मित होती है। समाज द्वारा थोपे गए नियमों (जैसे स्त्रीत्व की भूमिकाएँ—मातृत्व, आज्ञाकारिता) को दोहराकर जेंडर "परफॉर्म" किया जाता है। दूधनाथ सिंह की रचनाओं में स्त्री चरित्र इन परफॉर्मेटिव भूमिकाओं में फँसे दिखते हैं, लेकिन कुछ जगहों पर विद्रोह या असहजता के माध्यम से जेंडर की निर्मित प्रकृति उजागर होती है। [3]

इंटरसेक्शनल फेमिनिज्म और दलित-स्त्री विमर्श

समकालीन स्त्रीवाद में इंटरसेक्शनलिटी (intersectionality) महत्वपूर्ण है, जहाँ जेंडर के साथ जाति, वर्ग और गरीबी जैसे कारक जुड़कर दोहरा/त्रिहरा शोषण पैदा करते हैं। दूधनाथ सिंह के उपन्यास *निष्कासन* में दलित स्त्री का चरित्र पितृसत्ता, जातिवाद और आर्थिक शोषण से जूझता है—यह इंटरसेक्शनल फेमिनिज्म का उदाहरण है, जहाँ स्त्री-अस्मिता का संघर्ष बहुआयामी होता है। [4]

भारतीय संदर्भ में स्त्री विमर्श

भारतीय फेमिनिज्म में पितृसत्ता को जाति, धर्म और परंपरा से जोड़कर देखा जाता है। दूधनाथ सिंह की कहानियाँ (जैसे 'माई का शोकगीत') में स्त्री की पीड़ा इन संरचनाओं से जुड़ी है। समकालीन पुनर्वाचन में मीटू आंदोलन और बाँडी पॉजिटिविटी जैसे विमर्श

इन रचनाओं को नई प्रासंगिकता देते हैं। [5] ये सैद्धांतिक आधार दूधनाथ सिंह के कथा-साहित्य को स्त्रीवादी लेंस से देखने में सहायक हैं, जहाँ पितृसत्ता की आलोचना के साथ स्त्री-अस्मिता की संभावनाएँ भी उजागर होती हैं।

मुख्य विश्लेषण -

दूधनाथ सिंह के कथा-साहित्य में स्त्री-अस्मिता, पितृसत्ता और लैंगिक विमर्श का चित्रण सूक्ष्म, व्यंग्यात्मक और सामाजिक यथार्थ से युक्त है। उनका लेखन मुख्यतः मध्यवर्गीय पुरुष के अलगाव पर केंद्रित होने के बावजूद स्त्री चरित्रों को पितृसत्तात्मक संरचना के शिकार के रूप में प्रस्तुत करता है, जहाँ स्त्री की अस्मिता वस्तुकरण, शोषण और सामाजिक दबावों से कुचली जाती है। समकालीन फेमिनिस्ट दृष्टि (सिमोन द बोउआ की "स्त्री दूसरी होती है", जूडिथ बटलर की जेंडर परफॉर्मेटिविटी और इंटरसेक्शनल फेमिनिज्म) से पुनर्वाचन करने पर इन रचनाओं में पितृसत्ता की आलोचना के साथ स्त्री के प्रतिरोध और अस्मिता की झलक भी मिलती है।

'नपनी' में स्त्री वस्तुकरण और पितृसत्तात्मक बाजार

'नपनी' कहानी में दहेज-प्रथा और विवाह बाजार में स्त्री को वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया गया है। लड़की को "नापा" जाता है—उसकी लंबाई, रंग, स्वास्थ्य को फीते से मापा जाता है, जो सिमोन द बोउआ की "स्त्री दूसरी होती है" की अवधारणा को प्रतिबिंबित करता है—स्त्री पुरुष-केंद्रित मापदंडों से परिभाषित होती है। मूल अंश:

"तुम्हें भइआ ने फीते से ठीक से नापा था न?... नपनी पास आकर खड़ी हुई - एक साँवली सी, दुबली सी, मरी-मरी लड़की।" [6] यहाँ स्त्री की अस्मिता को नकारा जाता है; वह व्यक्ति नहीं, वस्तु (commodity) है। जेंडर परफॉर्मेटिविटी के संदर्भ में विवाह की रस्में स्त्रीत्व की भूमिका (आज्ञाकारिता, सुंदरता) को दोहराती हैं, लेकिन व्यंग्य से पितृसत्ता की विडंबना उजागर होती है।

'रीछ' में स्त्री-पुरुष संबंध और पितृसत्तात्मक कमजोरी

'रीछ' में दांपत्य जीवन की कलह और पितृसत्तात्मक संरचना में दोनों लिंगों की कैद दिखाई देती है। पत्नी पति से कहती है: "स्त्री, पुरुष की सबसे बड़ी कमजोरी होती है।" लेकिन पति की असहायता और रीछ (पालतू भालू) के साथ संघर्ष में स्त्री की आवाज दबी रहती है। पितृसत्ता पुरुष को "प्रबल" दिखाती है, लेकिन वास्तव में दोनों को बाँधती है। यह जेंडर परफॉर्मेटिविटी की सीमा दिखाता है—स्त्री पुरुष की "कमजोरी" के रूप में परिभाषित होती है, लेकिन उसकी अपनी इच्छा दब जाती है। [7]

'माई का शोकगीत' में घरेलू हिंसा और स्त्री की पीड़ा

शीर्षक कहानी 'माई का शोकगीत' में स्त्री पर घरेलू हिंसा का रोमांचकारी दस्तावेज है। एक स्त्री की कथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के समानांतर चलती है, जो पितृसत्ता में सदियों से शोषित स्त्री की पीड़ा को उजागर करती है। स्त्री की अस्मिता कुचली जाती है, लेकिन शोकगीत के माध्यम से उसकी पीड़ा और विद्रोह की झलक मिलती है। यह भारतीय संदर्भ में पितृसत्ता (धार्मिक कर्मकांड, परिवारिक दबाव) की आलोचना है। [8]

'निष्कासन' में दलित-स्त्री अस्मिता और इंटरसेक्शनल संघर्ष

उपन्यास निष्कासन में एक दलित लड़की का चरित्र विश्वविद्यालय परिसर में जाति, लिंग और आर्थिक शोषण से जूझता है। लेखक ने दलित स्त्री के आत्म-संघर्ष को केंद्र में रखा है—वह पितृसत्ता, सवर्णवाद और गरीबी के दोहरे/त्रिहरे शोषण का शिकार है। यह इंटरसेक्शनल फेमिनिज्म का स्पष्ट उदाहरण है, जहाँ स्त्री-अस्मिता का संघर्ष बहुआयामी होता है। लड़की अतिथि छात्रा के रूप में हॉस्टल में "चिपकी" रहती है, लेकिन उसका विद्रोह और आत्म-सम्मान की खोज मुक्ति की ओर इशारा करती है। [9]

समकालीन पुनर्वाचन और प्रासंगिकता

दूधनाथ सिंह का लेखन स्पष्ट रूप से स्त्रीवादी नहीं है (मुख्य फोकस पुरुष-केंद्रित विडंबना पर), लेकिन पितृसत्ता की सूक्ष्म आलोचना करता है। समकालीन फेमिनिस्ट लेंस (मीटू, बॉडी पॉजिटिविटी, दलित-स्त्री विमर्श) से देखने पर स्त्री चरित्रों में प्रतिरोध की संभावना उजागर होती है—वे शोषण सहती हैं, लेकिन कुछ जगह विद्रोह या असहजता दिखाती हैं। सीमाएँ: स्त्री अक्सर सहायक भूमिका में; पूर्ण मुक्ति का चित्रण कम। फिर भी, ये रचनाएँ हिंदी साहित्य में लैंगिक विमर्श को गहराई प्रदान करती हैं। [10]

समकालीन पुनर्वाचन -

दूधनाथ सिंह का कथा-साहित्य मूल रूप से व्यक्तिवादी-अस्तित्ववादी और मध्यवर्गीय विडंबना पर केंद्रित है, लेकिन समकालीन स्त्रीवादी (फेमिनिस्ट) दृष्टि से पुनर्वाचन करने पर यह स्पष्ट होता है कि उनका लेखन पितृसत्ता की सूक्ष्म और तीखी आलोचना करता है, जबकि स्त्री-अस्मिता की पूर्ण मुक्ति या स्वतंत्र आवाज को सीमित रूप से ही स्थान देता है। 21वीं सदी के विमर्श—जैसे

मीटू आंदोलन, बॉडी पॉजिटिविटी, इंटरसेक्शनल फेमिनिज्म (जेंडर + जाति + वर्ग का अंतर्संबंध) और पोस्ट-फेमिनिज्म—के परिप्रेक्ष्य में उनकी रचनाएँ नई प्रासंगिकता प्राप्त करती हैं।

पितृसत्ता की आलोचना और स्त्री वस्तुकरण का उजागर

'नपनी' और 'रीछ' जैसी कहानियों में स्त्री को वस्तु या पुरुष की कमजोरी के रूप में चित्रित किया गया है, जो सिमोन द बोउआ की "स्त्री दूसरी होती है" की अवधारणा से मेल खाता है। समकालीन पुनर्वाचन में यह दहेज-प्रथा और विवाह बाजार को देह-वस्तुकरण के रूप में देखा जा सकता है—आज के मीटू और बॉडी ऑटोनॉमी विमर्श में यह और अधिक प्रासंगिक है, जहाँ स्त्री का शरीर सामाजिक मापदंडों से नियंत्रित होता है। दूधनाथ सिंह का व्यंग्य पितृसत्ता की विडंबना को उजागर करता है, लेकिन स्त्री की सक्रिय एजेंसी (agency) को कम दिखाता है।

दलित-स्त्री के बहुआयामी संघर्ष और इंटरसेक्शनलिटी

उपन्यास निष्कासन में दलित स्त्री का चरित्र जाति, लिंग और आर्थिक शोषण के त्रिकोण में फँसा है। वह विश्वविद्यालय परिसर में अतिथि छात्रा के रूप में "चिपकी" रहती है, सेवा-टहल करती है और शोषण सहती है, लेकिन उसका आत्म-संघर्ष और मुक्ति की छतपटाहट स्पष्ट है। अमित कुमार सिंह के शोध के अनुसार, यह "एक दलित स्त्री के आत्म संघर्ष की गाथा" है, जो इंटरसेक्शनल फेमिनिज्म का जीवंत उदाहरण है—जहाँ जेंडर के साथ जाति और वर्ग का दोहरा/त्रिहरा दमन स्त्री-अस्मिता को और जटिल बनाता है। समकालीन दलित-स्त्री विमर्श (जैसे ओमप्रकाश वाल्मीकि या बामा के लेखन से तुलना) में यह रचना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह मुख्यधारा के लेखक द्वारा दलित स्त्री की पीड़ा को केंद्र में रखती है।

'माई का शोकगीत' में घरेलू हिंसा और सदियों का शोषण

इस कहानी में स्त्री की पीड़ा राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के समानांतर चलती है, जो पितृसत्ता में सदियों से चली आ रही घरेलू हिंसा और शोषण को उजागर करती है। समकालीन पुनर्वाचन में यह घरेलू हिंसा और धार्मिक कर्मकांडों द्वारा स्त्री के दमन को मीटू जैसे आंदोलनों से जोड़ता है, जहाँ व्यक्तिगत पीड़ा राजनीतिक बन जाती है। स्त्री का "शोकगीत" उसकी दबी आवाज का प्रतीक है, जो आज के #MeToo और #DalitWomenSpeak जैसे विमर्शों में प्रतिध्वनित होता है।

सीमाएँ और योगदान

दूधनाथ सिंह का लेखन स्पष्ट रूप से स्त्रीवादी नहीं है—स्त्री चरित्र अक्सर सहायक या पीड़ित भूमिका में रहते हैं, और उनकी अस्मिता का संघर्ष पुरुष-केंद्रित विडंबना के छत्रछाया में रहता है। फिर भी, उनका व्यंग्य और यथार्थवाद पितृसत्ता की संरचनाओं को चुनौती देता है। समकालीन फेमिनिस्ट पुनर्वाचन से यह स्पष्ट होता है कि उनकी रचनाएँ हिंदी साहित्य में लैंगिक विमर्श को गहराई प्रदान करती हैं—वे 1960-2000 के दौर में ही स्त्री शोषण के मुद्दों को उठाती हैं, जो आज के डिजिटल फेमिनिज्म और इंटरसेक्शनल दृष्टि से और अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। यह पुनर्वाचन उनके योगदान को नया आयाम देता है: पितृसत्ता की आलोचना के माध्यम से स्त्री-अस्मिता की संभावनाओं को उजागर करना।

निष्कर्ष-

दूधनाथ सिंह का कथा-साहित्य साठोत्तरी हिंदी कहानी में पितृसत्ता की सूक्ष्म आलोचना और स्त्री की दबी-कुचली अस्मिता को उजागर करता है, भले ही उनका मुख्य फोकस मध्यवर्गीय पुरुष की विडंबना पर रहा हो। 'नपनी' में स्त्री का वस्तुकरण, 'रीछ' में दांपत्य की पितृसत्तात्मक कैद, 'माई का शोकगीत' में घरेलू हिंसा की पीड़ा, और 'निष्कासन' में दलित स्त्री का बहुआयामी संघर्ष—ये सभी समकालीन फेमिनिस्ट दृष्टि (सिमोन द बोउआ, जूडिथ बटलर, इंटरसेक्शनल फेमिनिज्म) से पुनर्वाचन करने पर प्रासंगिक हो उठते हैं। उनका लेखन स्पष्ट रूप से स्त्रीवादी नहीं है—स्त्री चरित्र अक्सर सहायक या पीड़ित भूमिका में रहते हैं—फिर भी पितृसत्ता की विडंबनाओं को व्यंग्य से बेनकाब करता है और स्त्री के प्रतिरोध की संभावना को छूता है। मीटू, बॉडी पॉजिटिविटी और दलित-स्त्री विमर्श जैसे आज के संदर्भों में ये रचनाएँ नई अर्थवत्ता प्राप्त करती हैं। संक्षेप में, दूधनाथ सिंह का कथा-साहित्य हिंदी साहित्य में लैंगिक विमर्श को गहराई देता है और पितृसत्ता के विभिन्न रूपों की आलोचना के माध्यम से स्त्री-अस्मिता की खोज को एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। यह अध्ययन उनके लेखन को समकालीन स्त्रीवादी लेंस से देखकर हिंदी कथा-साहित्य की समझ को और समृद्ध करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. दूधनाथ सिंह. (1972). नपनी. प्रेमकथा का अंत न कोई. राजकमल प्रकाशन.
2. द बोउआ, सिमोन. (1949). द सेकंड सेक्स . (हिंदी रूपांतरण: प्रभा खेतान द्वारा; "स्त्री दूसरी होती है" की अवधारणा;
3. बटलर, जूडिथ. (1990). जेंडर ट्रबल: फेमिनिज्म एंड द सबवर्शन ऑफ आइडेंटिटी. रूटलेज. (जेंडर परफॉर्मेटिविटी; amherst.edu और अन्य स्रोतों से)।
4. सिंह, अमित कुमार. (2021). निष्कासन: एक दलित स्त्री के आत्म संघर्ष की गाथा. अपनी माटी.
5. विभिन्न आलोचनात्मक स्रोत: "दूधनाथ सिंह की कहानियों में पारिवारिक जीवन की छवियों का अध्ययन"; "दूधनाथ सिंह की कहानियों में मानवीय संवेदना" ।
6. सिंह, दूधनाथ. (1972). नपनी. प्रेमकथा का अंत न कोई . राजकमल प्रकाशन।
7. सिंह, दूधनाथ. (1967). रीछ. सपाट चेहरे वाला आदमी. राजकमल प्रकाशन. (pahleebars.blogspot.com और hindisamay.com से प्रेरित)।
8. सिंह, दूधनाथ. (1992). माई का शोकगीत. माई का शोकगीत (संग्रह). राजकमल प्रकाशन।
9. सिंह, दूधनाथ. (2002). निष्कासन. राजकमल प्रकाशन।
10. विभिन्न आलोचनात्मक स्रोत: "दूधनाथ सिंह की कहानियों में पारिवारिक जीवन की छवियों का अध्ययन"